पाठ 9. मुक्ति मार्ग

पाठ का परिचय

झींगुर अपने जीवन से बहुत खुश था। एक दिन संध्या के समय वह अपने बेटे को गोद में लिए मटर की फलियाँ तोड़ रहा था। इतने में उसे भेड़ों का एक झुंड अपनी तरफ़ आता दिखाई दिया। वह समझ गया कि यह बुद्धू गडरिया है। उसने उसे वापस लौटने की चेतावनी दी लेकिन बुद्धू नहीं माना। उसकी भेड़ें झींगुर के खेतों में घुसने लगीं। झींगुर ने डंडा उठाकर भेड़ों की निर्ममता से पिटाई की। बुद्धू ने बदला लेने के लिए कुछ समय बाद झींगुर के खेतों में आग लगा दी। झींगुर के साथ-साथ गाँव के सभी लोगों के खेत जल गए। सभी ने उसे बुरा-भला कहना शुरू किया। झींगुर यदि बुद्धू से लड़ाई मोल नहीं लेता तो शायद यह न होता। थोड़े दिनों बाद झींगुर ने बुद्धू को फँसाने के लिए एक गाय उसके भेड़ों के झुंड में बाँध दी। उसने हरिहर के साथ मिलकर उसे कुछ खिला दिया और गाय के मरने का पाप बुद्धू के सिर मढ़ दिया। बुद्धू को प्रायश्चित करने के लिए अपना सब कुछ बेचना पड़ा। अब बुद्धू और झींगुर दोनों ही एक कारखाने में काम करने लगे। दोनों ही इस सत्य को जानते थे कि बुद्धू ने खेत में आग लगाई थी और झींगुर ने गाय को कुछ खिलाकर मार दिया था लेकिन अब क्या? दोनों अपने बुरे कर्मों का परिणाम भुगत रहे थे।

पाठ का वाचन

बच्चों को कहानी का मौन वाचन करने को कहें –

- मौन वाचन के बाद बच्चे कहानी का सार अपने शब्दों में कक्षा में सुनाएँ।
- कहानी के चरित्रों पर चर्चा करें।
- बच्चों को कहानी के किसी अंश का संवाद-लेखन करने को कहें।
- उसी अंश का कक्षा में अभिनय करवाएँ।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

यदि किसी के लिए हम बुरी भावना मन में लाते हैं तो हमारा भी बुरा हो सकता है। बुराई का परिणाम बुरा ही होता है।

महत्वपूर्ण चर्चा

कहानी से संबंधित निम्न प्रश्नों पर बच्चों से चर्चा करें –

- क्या झींगुर ने बुद्धू की भेड़ों को मारकर अच्छा काम किया? जानवरों को हमें क्यों नहीं मारना चाहिए?
- बुद्धू की जगह यदि तुम होते तो अपनी भेड़ों को कहाँ से ले जाते?
- झींगुर और बुद्धू के जीवन से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?
- यदि झींगुर की जगह तुम होते तो क्या तुम भी गौ हत्या का आरोप लगाकर अपने शत्रु को परास्त करने की कोशिश करते?